eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 08, August 2025

भारतीय भारत–चीन संबंध : समकालीन चुनौतियाँ और भविष्य

डा0 अरविन्द कुमार शुक्ल[1]
[1]एसोसिएट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय, बिंदकी फ़तेहपुर उ0प्र0, भारत

Received: 20 August 2025 Accepted & Reviewed: 25 August 2025, Published: 31 August 2025

Abstract

यह शोध–पत्र भारत और चीन के समकालीन सम्बन्धों की चुनौतियों और भविष्य के सम्भावित परिदृश्यों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, 2020 के गलवान झड़प के पश्चात बदलते सैन्य गतिशीलता, आर्थिक परस्पर निर्भरता व व्यापारिक असंतुलन, प्रौद्योगिकीय–प्रतिस्पर्धा, क्षेत्रीय गठबंधनों और अनपारंपरिक सुरक्षा (जैसे– महत्वपूर्ण खनिज, सप्लाई–चेन) जैसे मुद्दों का विवेचन किया गया है। शोध में नीति–विकल्पों और तीन संभावित परिदृश्यों, नियंत्रित प्रतिस्पर्धा, सामरिक अलगाव, और क्रमिक सुलह का वर्णन है। निष्कर्ष में भारत के लिए संतुलित सामरिक नीतियाँ, आर्थिक विविधीकरण, बहुपक्षीय संवाद और चुनिंदा विश्वास–निर्माण उपाय सुझाये गये हैं।

मुख्य शब्द– भारत–चीन सम्बन्ध, सीमांत तनाव, गलवान, व्यापार असंतुलन, बीआरआई, सीपेक, सामरिक प्रतिस्पर्धा, नीतिगत विकल्प, आपूर्ति–श्रृंखला, महत्वपूर्ण खनिज।

Introduction

भारत और चीन एशिया की दो प्राचीन सभ्यताओं तथा विश्व की सबसे बड़ी जनसंख्या वाले दो आधुनिक राष्ट्र हैं। दोनों देशों की ऐतिहासिक परंपराएँ, सांस्कृतिक वैभव और आर्थिक–सामरिक आकांक्षाएँ उन्हें वैश्विक राजनीति में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करती हैं। बीसवीं शताब्दी के मध्य में स्वतंत्र राष्ट्रों के रूप में उभरने के बाद से ही भारत–चीन सम्बन्ध एक जटिल प्रक्रिया से गुज़रे हैं, कभी सहयोगी, कभी प्रतिद्वंद्वी, तो कभी संतुलन साधने वाले। पंचशील सिद्धांतों और "हिन्दी–चीनी भाई–भाई" जैसे नारे से प्रारम्भ हुई निकटता 1962 के सीमा–युद्ध में गंभीर अविश्वास में बदल गई। इसके बाद से रिश्तों का ग्राफ़ बार–बार उतार–चढ़ाव का शिकार हुआ, कभी कूटनीतिक मेल–मिलाप और आर्थिक सहयोग, तो कभी सीमांत तनाव और सामरिक अविश्वास। इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक में वैश्विक शक्ति–संतुलन तेजी से बदल रहा है। चीन ने तीव्र आर्थिक वृद्धि और सैन्य आधुनिकीकरण के बल पर एशिया–प्रशांत क्षेत्र में अपना प्रभाव बढ़ाया है, जबकि भारत ने उदारीकरण के बाद की आर्थिक उपलब्धियों और लोकतांत्रिक संस्थाओं के सहारे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपनी भूमिका सुदृढ़ की है। परंतु इसी अवधि में सीमा विवाद, पाकिस्तान–चीन निकटता, बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव, और हिंद–प्रशांत क्षेत्र में क्वाड जैसी नई सामरिक व्यवस्थाओं ने भारत–चीन रिश्तों को नई चुनौती दी है। 2020 की गलवान घाटी की झड़प ने दोनों देशों के बीच दशकों से निर्मित न्यूनतम भरोसे को भी गहरा आघात पहुँचाया और यह संकेत दिया कि द्विपक्षीय संबंध किसी भी समय अचानक संकट में बदल सकते हैं। सिर्फ सामरिक या सैन्य स्तर पर ही नहीं, बल्कि आर्थिक मोर्चे पर भी जटिलताएँ बढ़ रही हैं। भारत–चीन व्यापार तेज़ी से बढ़ा है, किंतु इसके साथ ही भारत का व्यापार घाटा अभूतपूर्व स्तर तक पहुँच चुका है। महत्वपूर्ण तकनीकी क्षेत्रों जैसे सेमीकंडक्टर, बैटरी निर्माण, दुर्लभ खनिज और आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस में चीन की गहरी पकड़ भारत की आपूर्ति–श्रृंखला सुरक्षा के लिए

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 08, August 2025

चुनौती है। इसी प्रकार, जलसंसाधनों और पर्यावरणीय परिवर्तन से जुड़े मुद्दे भविष्य में तनाव का स्रोत बन सकते हैं। इन परिस्थितियों में भारत–चीन सम्बन्धों को समझने के लिए केवल अतीत की घटनाओं का विवेचन पर्याप्त नहीं है। आवश्यक है कि हम समकालीन चुनौतियों का बहुआयामी विश्लेषण करें, सुरक्षा, आर्थिक, तकनीकी, पर्यावरणीय और बहुपक्षीय मंचों पर दोनों देशों की नीतियों को परखें ताकि भविष्य की सम्भावनाओं का यथार्थ मूल्यांकन किया जा सके। यह शोध–पत्र इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है।

इस अध्ययन के प्रमुख प्रश्न हैं–

वर्तमान समय में भारत–चीन सम्बन्ध किन प्रमुख चुनौतियों का सामना कर रहे हैं?

क्या आर्थिक परस्पर–निर्भरता सीमा विवादों को संतुलित कर सकती है या तनाव को और गहरा करती है?

क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर बदलते गठबंधनों का दोनों देशों की रणनीति पर क्या प्रभाव पड़ रहा है?

भविष्य में इन सम्बन्धों के कौन–कौन से संभावित परिदृश्य सामने आ सकते हैं, और भारत को किन नीतिगत विकल्पों पर विचार करना चाहिए?

इन प्रश्नों के उत्तर खोजने के लिए यह शोध ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का संक्षिप्त पुनरावलोकन करता है, फिर समकालीन मुद्दों जैसे सीमांत सुरक्षा, आर्थिक असंतुलन, तकनीकी प्रतिस्पर्धा, क्षेत्रीय भू–राजनीति का विश्लेषण प्रस्तुत करता है और अंत में नीतिगत अनुशंसाओं व संभावित परिदृश्यों की चर्चा करता है। उद्देश्य केवल चुनौतियों की सूची बनाना नहीं, बल्कि भारत की विदेश नीति के लिए ठोस और व्यावहारिक सुझाव प्रस्तुत करना है, ताकि आने वाले दशकों में भारत–चीन सम्बन्धों को संतुलित, सुरक्षित और स्थिर बनाया जा सके।

शोध का दायरा और पद्धति– यह शोध गुणात्मक–विश्लेषण पर आधारित है, जिसमें प्राथमिक रूप से सार्वजनिक रूप से उपलब्ध सरकारी वक्तव्य, आधिकारिक व्यापार–सांख्यिकी, समाचाररिपोर्ट और प्रमुख विदेश नीति–विचार–कक्ष के विश्लेषणों का समेकन किया गया है। विश्लेषण की मुख्य धारणाएँ हैं– सीमांत विवादों की रणनीतिक प्रकृति, आर्थिक परस्पर निर्भरता का द्विध्रुवीय प्रभाव, और बहुपक्षीय संस्थाओं में दोनों देशों की भागीदारी का भूमिका–निर्धारण। शोध में प्राथमिक प्रमाण के लिए विदेश विभाग व वाणिज्य मंत्रालय के डेटा तथा द्वितीयक स्रोतों के लिए Carnegie, CFR, Chatham House, IISS एवं त्मनजमते जैसे स्रोतों का सहारा लिया गया है। भारत चीन सम्बन्धों का इतिहास अत्यन्त प्राचीन और बहुस्तरीय है। सांस्कृतिक आदान प्रदान से लेकर आधुनिक राष्ट्र–राज्यों के राजनीतिक टकराव तक, इन दोनों सभ्यताओं ने सहस्राब्दियों के दौरान विविध रूपों में एक–दूसरे को प्रभावित किया। वर्तमान द्विपक्षीय सम्बन्धों की जटिलता को समझने के लिए यह आवश्यक है कि हम उनके ऐतिहासिक विकास की रूपरेखा पर दृष्टि डालें। नीचे प्राचीन काल से लेकर समकालीन काल तक का एक संक्षिप्त लेकिन विस्तृत क्रम प्रस्तुत है।

प्राचीन एवं मध्यकालीन सांस्कृतिक सम्पर्क– भारत और चीन के बीच संपर्क का प्रारम्भ लगभग दो हज़ार वर्ष पूर्व बौद्ध धर्म के प्रसार से हुआ। अशोक के काल में बौद्ध भिक्षु चीन पहुँचे और चीन के अनेक राजवंशों विशेषकर हान और तांग राजवंशकृने भारतीय बौद्ध धर्म से गहरा प्रभाव ग्रहण किया। चीनी यात्री फाह्यान (Fa-Hien, 5वीं शताब्दी) और ह्वेनसांग (Hsxan-tsang) 7वीं शताब्दी) भारत आए और उन्होंने नालंदा विश्वविद्यालय, भारतीय समाज तथा धार्मिक जीवन का विस्तृत वर्णन किया। इसी प्रकार भारत में रेशम मार्ग

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 08, August 2025

के माध्यम से चीनी वस्त्रों और कलाओं का परिचय हुआ। यह सांस्कृतिक–धार्मिक आदान–प्रदान इस बात का प्रमाण है कि प्राचीन काल में दोनों सभ्यताएँ परस्पर सम्मान और ज्ञान–विनिमय के रिश्ते से जुड़ी थीं। मध्यकाल में, विशेषकर तेरहवीं से सत्रहवीं शताब्दी तक, व्यापारिक संपर्क कुछ हद तक जारी रहा, परंतु इस दौरान यूरोपीय उपनिवेशवाद के विस्तार और समुद्री व्यापार मार्गों में बदलाव के कारण प्रत्यक्ष संपर्क में कमी आई।

औपनिवेशिक युग और उन्नीसवीं शताब्दी– ब्रिटिश साम्राज्य के उदय के समय भारत और चीन दोनों ही यूरोपीय शक्तियों के प्रभाव क्षेत्र में आ गए थे। 19वीं शताब्दी में अफ़ीम युद्धों के बाद चीन पर पश्चिमी देशों का दबाव बढ़ा, जबकि भारत पहले ही ब्रिटिश राज के अधीन था। इस दौरान दोनों देशों के बीच कोई स्वतंत्र राजनयिक सम्बन्ध नहीं थे, परंतु ब्रिटिश भारतीय शासन की नीतियों ने चीन के साथ भारत की सीमाओं का निर्धारण करने की प्रक्रिया आरम्भ की। यही वह समय था जब उत्तर–पूर्वी सीमाओं (विशेषकर अरुणाचल प्रदेश तब का नेफा और लद्दाख क्षेत्र) में औपनिवेशिक युग के समझौते भविष्य में विवाद का आधार बने।

स्वतंत्रता और प्रारम्भिक कूटनीतिक मित्रता (1947–1959)– भारत 1947 में स्वतंत्र हुआ और 1949 में चीन में जनवादी गणराज्य की स्थापना हुई। पं. जवाहरलाल नेहरू और माओ त्से तुंग के नेतृत्व में दोनों देशों ने नई स्वतंत्रता की भावना के साथ एक–दूसरे को सहयोगी दृष्टि से देखा। 1954 में पंचशील समझौता आपसी सम्मान और आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने के पाँच सिद्धांत भारत–चीन मैत्री का प्रतीक बना। "हिन्दी–चीनी भाई–भाई" का नारा इसी दौर में प्रचलित हुआ। किन्तु इसी समय तिब्बत का प्रश्न उभरने लगा। 1950 में चीन ने तिब्बत पर सैन्य नियंत्रण स्थापित किया और भारत ने दलाई लामा को शरण दी, जिससे बीजिंग को संदेह हुआ। 1959 में तिब्बती विद्रोह के बाद भारत–चीन सम्बन्धों में पहली गहरी दरार आई।

1962 का सीमा युद्ध और अविश्वास– 1962 में अक्साई चिन और अरुणाचल प्रदेश (तब नेफा) की सीमाओं पर विवाद के चलते भारत और चीन के बीच युद्ध हुआ। भारत को इस युद्ध में हार का सामना करना पड़ा और दोनों देशों के सम्बन्ध दशकों तक ठंडे पड़े रहे। यही युद्ध भारत–चीन सम्बन्धों के आधुनिक दौर का निर्णायक मोड़ था, जिसने द्विपक्षीय विश्वास को गहरा आघात पहुँचाया।

1970–1980 के दशक, धीरे–धीरे पुनः संपर्क– 1976 में राजनयिक सम्बन्ध पुनः स्थापित हुए और 1979 में अटल बिहारी वाजपेयी विदेश मंत्री के रूप में चीन गए। 1988 में प्रधानमंत्री राजीव गांधी की ऐतिहासिक बीजिंग यात्रा के दौरान दोनों देशों ने रिश्तों को सामान्य करने और सीमा प्रश्न पर विशेष प्रतिनिधि वार्ता आरम्भ करने पर सहमति दी। यह एक महत्वपूर्ण मोड़ था जिसने शीतयुद्ध के अंतिम वर्षों में धीरे–धीरे विश्वास बहाली की प्रक्रिया शुरू की।

1990 के दशक, आर्थिक उदारीकरण और सहयोग– भारत के आर्थिक उदारीकरण (1991) के बाद दोनों देशों के बीच व्यापार तेज़ी से बढ़ा। 1993 और 1996 में सीमा पर शांति एवं विश्वास–निर्माण समझौते हुए, जिन्होंने वास्तविक नियंत्रण रेखा पर बड़े पैमाने पर शांति बनाए रखने में मदद की। यद्यपि सीमा विवाद सुलझा नहीं, परन्तु यह काल आपसी आर्थिक हितों और बहुपक्षीय सहयोग के बढ़ने का समय था।

2000–2010 का दशक, बढ़ता व्यापार, पर अंतर्निहित तनाव– नए सहस्राब्दी में भारत–चीन व्यापार 100 अरब डॉलर से ऊपर चला गया। चीन भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बन गया। परंतु साथ ही,

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 08, August 2025

पाकिस्तान–चीन रणनीतिक साझेदारी, चीन का बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव, दक्षिण चीन सागर की नीतियाँ और संयुक्त राष्ट्र में मसूद अजहर जैसे मुद्दों पर चीन का रुख भारत को सतर्क करता रहा।

2010–2020 सीमा पर झड़पें और बढ़ता सामरिक अविश्वास– डोकलाम (2017) में भारत और चीन के बीच लगभग 73 दिनों तक चला गतिरोध संकेत देता है कि LAC पर शांति अस्थिर हो रही है। 2020 में गलवान घाटी में हुई हिंसक झड़प ने दशकों से चली आ रही स्थिरता को तोड़ दिया। इसमें दोनों पक्षों को जनहानि हुई और सीमा पर सैनिक जमावड़े में भारी वृद्धि हुई। यह घटना द्विपक्षीय संबंधों के लिए एक और ऐतिहासिक झटका साबित हुई।

2020 के बाद, सीमांत गतिरोध और सामरिक पुर्नसंतुलन– गलवान के बाद से दोनों देशों ने कई दौर की सैन्य व कूटनीतिक वार्ता की, कुछ स्थानों पर सैनिकों की चरणबद्ध वापसी भी हुई, परंतु पूर्ण समाधान अब तक नहीं हुआ। भारत ने क्वाड जैसे बहुपक्षीय समूहों में अपनी भूमिका सुदृढ़ की और आपूर्ति–श्रृंखला विविधीकरण की दिशा में कदम बढ़ाए। चीन ने भी क्षेत्रीय व्यापारिक समूहों जैसे RCEP— में अपनी पकड़ मजबूत की। भारत चीन सम्बन्धों की यह ऐतिहासिक यात्रा बताती है कि जहाँ प्राचीन काल में दोनों सभ्यताओं ने ज्ञान और संस्कृति के स्तर पर सहयोग किया, वहीं आधुनिक युग में भू–राजनीतिक यथार्थ और राष्ट्रीय हितों के टकराव ने रिश्तों को बार–बार चुनौती दी है। 1962 के युद्ध की स्मृति, सीमा विवाद की अनसुलझी स्थिति, तिब्बत का प्रश्न, पाकिस्तान–चीन गठजोड़, तथा आर्थिक प्रतिस्पर्धा, ये सभी आज भी द्विपक्षीय सम्बन्धों को प्रभावित करते हैं। इतिहास का यह परिप्रेक्ष्य स्पष्ट करता है कि भारत चीन सम्बन्ध केवल समकालीन घटनाओं का परिणाम नहीं, बल्कि दीर्घकालिक ऐतिहासिक प्रक्रियाओं की देन हैं। वर्तमान की हर नीति और हर चुनौती चाहे वह गलवान हो, तकनीकी प्रतिस्पर्धा हो या बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव इन ऐतिहासिक परतों से प्रभावित है। इस पृष्ठभूमि को ध्यान में रखे बिना भारत–चीन सम्बन्धों की समकालीन चुनौतियों और भविष्य का यथार्थ विश्लेषण सम्भव नहीं है।

समकालीन चुनौतियाँः विस्तृत विश्लेषण

सीमांत सुरक्षा और सैन्य–तनाव – सैन्य उपस्थिति और युक्तियों की बढोत्तरी, गलवान (June 2020) जैसी झड़पों के बाद दोनों पक्षों ने लद्दाख/हिमालयी क्षैतिज क्षेत्र में तैनाती और लॉजिस्टिक क्षमताओं को बढ़ाया। सीमांत निर्णायक ज़ोन पर नियम–आधारित समानताएँ टूटती दिखीं, जिससे किसी भी टकराव का जोखिम अधिक हो गया। हाल में एक चरणबद्ध M-,Ldsys'ku और बातचीत की प्रक्रिया चल पड़ी, पर यह रणनीतिक शमन नहीं बल्कि नैतिक थाव मानी जा रही है।

विश्वसनीयता और संचार–प्रोटोकॉल का अभाव– सीमांत घटनाओं ने पारम्परिक वार्ता–तंत्रों की सीमाएँ दर्शाईं, दोनों पक्षों के बीच भरोसा कमजोर हुआ है। सीमांत गतिरोध (Lac-PLA)।

आर्थिक असंतुलन और आपूर्ति–श्रृंखला– व्यापार घाटा व निर्भरता 2024–25 में भारत का चीन के साथ व्यापार घाटा अभूतपूर्व रूप से बढ़ा, वर्ष–वार आँकड़ों के अनुसार चीन के साथ द्विपक्षीय व्यापार तथा आयात–आधारित निर्भरता के बढ़ने से आर्थिक सुरक्षा की चिंताएँ बढ़ीं। (उदा. 2024/25 आर्थिक वर्ष में व्यापार घाटा रिकॉर्ड पर पहुंचा)।

सप्लाई–चेन विषमताएँ– इलेक्ट्रॉनिक्स, कीमिकल्स, महत्वपूर्ण घटक में चीन का प्रभुत्व भारत को संवेदनशील बनाता है। हाल के वैश्विक घटनाक्रमों ने दिखाया कि चीन–आपूर्ति–निषेध, या तकनीकी प्रतिबन्धों का प्रभाव तीव्र और तीव्र हो सकता है।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 08, August 2025

क्षेत्रीय रणनीति और CPEC@BRI– चीन की BRI पहल और पाकिस्तान में CPEC का विस्तार भारत के लिए रणनीतिक चुनौती है। विशेषकर पाकिस्तान–चीनी आर्थिक और सैन्य साझेदारी से भारत को सीमावर्ती दबाव का सामना करना पड़ता है। चीन का इन्फ्रास्ट्रक्चर निवेश भारत–पास के क्षेत्रों में उसकी सशक्त उपस्थिति को बढ़ाता है।

बहुपक्षीय मंच और वैश्विक पॉलिटिक्स– BRICS, SCO, G 20 जैसे मंचों पर दोनों देशों की भागीदारी और प्रतिस्पर्धा नई विविधताओं के साथ चल रही है। इन मंचों में सहयोग के साथ–साथ प्रतिस्पर्धा भी स्पष्ट है; दोनों ही राष्ट्र वैश्विक संस्थाओं के पुनर्संरचना के पक्षधर हैं पर आपसी भरोसा कम है।

तकनीकी और साइबर–प्रतिस्पर्धा– 5G, AI, हाई–एंड सेमीकंडक्टर्स तथा क्रिटिकल मिनरल्स में प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है। चीन की अग्रणी विनिर्माण– एवं संसाधन राजनीतिकता भारत के तकनीकी आत्मनिर्भर बनने की चुनौतियों को और जटिल बनाती है। हाल के वर्षों में तंतम–मंतजी एवं अन्य critical inputs पर चीन का प्रभाव वैश्विक रणनीति का हिस्सा बनता जा रहा है।

राजनीति–आधारित अचरज– दोनों देशों में आंतरिक राजनीति (राष्ट्रवादी प्रवृत्तियाँ, सुरक्षा–फोकस, विकास–दबाव) द्विपक्षीय नीतियों को प्रभावित करती है। चुनाव, सार्वजनिक धारणा और मिडिया–नैरेटिव सीमाओं पर संकट को तीव्र कर सकते हैं।

पर्यावरण, जल व संसाधन– हिमालयी क्षेत्र में जलश्रोत और ग्लेशियर सम्बन्धी चुनौतियाँ दोनों देशों के लिए संयुक्त सुरक्षा का विषय बन सकती हैं, जल–स्रोतों पर प्रतिस्पर्धा भविष्य में तनाव का स्रोत बन सकती है।

केस–स्टडी– गलवान 2020 और 2024–2025 की चली थाव प्रक्रिया (Case Study: Galwan & Post-2024 Development)

गलवान 2020– 2020 जून में गलवान में हुई झड़प ने दोनों देशों के बीच सेना–स्तर पर सबसे खतरनाक टकराव किया और इसमें हताहत हुए। इस घटना के परिणामस्वरूप सीमा पर दोनों पक्षों ने सुरक्षा–उपकरणों और तैनाती को बढ़ाया।

2024 समझौता और 'M&,Ldsys' अक्टूबर 2024 में दोनों देशों ने सीमा–संबंधी एक समझौते की घोषणा की और बातचीत के आरम्भ के संकेत मिले; यह कदम एक तत्कालिक शमन था पर इसे रणनीतिक पुनर्स्थापना नहीं माना जा रहा है, यह अधिकतर कम–लटकते फलों, को हल करने जैसा रहा। विशेषज्ञों के अनुसार यह पूर्ण भरोसे की वापसी नहीं है, पर यह जोखिमों को कुछ हद तक घटाने का मार्ग हो सकता है।

नीतिगत विकल्प और रणनीतियाँ– भारत के संदर्भ में निम्न–प्राथमिक नीतिगत विकल्प सुझाये जा सकते हैं, जिन्हें साथ मिलाकर लागू करना श्रेयस्कर होगा।

सशक्त प्रत्याशा और प्रतिकार– सीमा पर सुरक्षा–तंत्र को दृढ़ रखते हुए स्पष्ट नीतिगत संकेत, बनाए रखें; परंतु सैन्य उपायों के साथ सामरिक संवाद–मैकैनिज्म भी सक्रिय रखें। (मिश्रित सैन्य–कूटनीतिक रणनीति)।

आर्थिक विविधीकरण और 'सूत्र'– रणनीतिक इनपुटों (rare-earths, batteries, solar components, pharmaceuticals inputs) के विविध स्रोत विकसित करना।

घरेलू विनिर्माण को प्रोत्साहित करने हेतु निवेश व टेक–ट्रांसफर को आकर्षित करना। सस्ते आपूर्ति–स्रोत पर निर्भरता कम करना।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 08, August 2025

बहुपक्षीयकरण और गठबंधन – Quad, RCEP- बाहरी साझेदारियों एवं क्षेत्रीय वित्तीय मंचों में अधिक सक्रिय भागीदारी ताकि दबाव–संतुलन सम्भव हो। विशेष रूप से आर्थिक एवं प्रौद्योगिकी सहयोग के माध्यम से वैकल्पिक मार्ग विकसित करना।

दक्षिण एशिया–कूटनीति– पड़ोसी देशों (नेपाल, भूटान, श्रीलंका, मालदीव) के साथ रणनीतिक सम्बन्ध सुदृढ़ करना ताकि चीन की वृद्धि–नीति का क्षेत्रीय प्रभाव संतुलित हो सके।

विश्वसनीय संवाद एवं विश्वास–निर्माण– सीमांत पर दुर्घटनाओं पर जल्द–से–जल्द संवाद, सैनिक–स्तर की हॉटलाइन, मीडिया–विनिमय और सांस्कृतिक/अकादमिक संवाद बढ़ाना। हालिया 2024 थाव ने दिखाया कि tactical parleys काम कर सकते हैं पर स्थायी भरोसा लौटाने के लिए गहरे ठोस कदमों की आवश्यकता होगी।

टेक्नो–नीति और मानव–पूंजी – सेमीकंडक्टर, AI, clean energy टेक्नोलॉजी में निवेश, R&D पर जोर और प्रतिभा विकास ताकि दीर्घकालिक प्रतिस्पर्धा सम्भव हो सके।

भावी परिदृश्य– नीतिगत–निर्धारकों के विकल्पों और बाहरी घटनाओं पर स्थित तीन संभावित परिदृश्य स्पष्ट होते हैं।

Managed Competition (नियंत्रित प्रतिस्पर्धा)– सीमांत मुद्दों पर स्थायी समाधान नहीं पर टकराव के जोखिम सीमित देशों के बीच आर्थिक जुड़ाव बरकरार लेकिन सुरक्षा–दृष्टिकोण से सजगता। (सबसे संभावित मध्यम–कालीन परिदृश्य)।

Strategic Decoupling (रणनीतिक अलगाव), तेजी से आर्थिक व तकनीकी अलगाव, भारत और उसके साझेदार चीनी आपूर्ति–श्रृंखला से दूरी बनाते हैं; व्यापारिक संकुचन के बावजूद सुरक्षा संबंधों पर अधिक सख्ती। इसके आर्थिक लागत और वैश्विक सप्लाई–शॉक परिणाम होंगे।

Gradual Rapprochement (क्रमिक सुलह)– बहुपक्षीय मंत्रियों और आर्थिक हितों के कारण समय के साथ भरोसा व सहयोग बढ़ता है, परन्तु यह तभी सम्भव है जब सीमा पर भरोसेमंद और सत्यापन–योग्य समझौते हों। हालाँकि यह परिदृश्य तब ही आएगा जब दोनों पक्षों के दीर्घकालिक हित मेल खाएँ।

निष्कर्ष– भारत चीन संबंधों का इतिहास और वर्तमान परिदृश्य यह दर्शाते हैं कि दोनों देशों के बीच सहयोग और प्रतिस्पर्धा का द्वंद्व लगातार जारी है। प्राचीन काल की सांस्कृतिक एवं व्यापारिक साझेदारी से लेकर 20वीं शताब्दी के मध्य में प्रारम्भ हुई आधुनिक कूटनीति तक, यह संबंध कई चरणों से गुज़रे हैं कभी नज़दीकी और भाईचारे के, तो कभी कटु संघर्ष और अविश्वास के। 1962 का युद्ध, सीमावर्ती विवाद, पाकिस्तान के साथ चीन की रणनीतिक निकटता, तिब्बत और दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय राजनीति जैसे मुद्दों ने इस रिश्ते में गहरे अवरोध उत्पन्न किए हैं। 21वीं सदी में दोनों देशों का वैश्विक महत्व और भी बढ़ गया है। चीन तीव्र आर्थिक प्रगति और सैन्य आधुनिकीकरण के बल पर एक महाशक्ति के रूप में उभरा है, वहीं भारत ने लोकतांत्रिक मूल्यों, आईटी–आधारित अर्थव्यवस्था और उभरती वैश्विक भूमिका के माध्यम से अपनी पहचान मजबूत की है। इस पृष्ठभूमि में आपसी सहयोग की संभावनाएँ अपार हैं व्यापार, जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद–रोधी सहयोग, बहुपक्षीय मंचों पर साझा हित और क्षेत्रीय स्थिरता जैसे क्षेत्रों में साझेदारी दोनों देशों के लिए लाभकारी हो सकती है। फिर भी, वास्तविकता यह है कि सीमावर्ती तनाव, गलवान जैसी घटनाएँ, व्यापार असंतुलन, तकनीकी प्रतिस्पर्धा, हिंद–प्रशांत क्षेत्र की भू–राजनीति, तथा चीन की बेल्ट एंड

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 08, August 2025

रोड इनिशिएटिव जैसी परियोजनाएँ रिश्तों में अविश्वास को गहरा करती हैं। आर्थिक परस्पर–निर्भरता के बावजूद रणनीतिक अविश्वास, खासकर सुरक्षा से जुड़े क्षेत्रों में, निरंतर बना हुआ है। यह भी स्पष्ट है कि न तो पूर्ण प्रतिस्पर्धा और न ही अंधा सहयोग इन संबंधों का भविष्य तय करेगा; बल्कि 'प्रतिस्पर्धात्मक सह–अस्तित्व' की स्थिति लंबे समय तक जारी रहने की संभावना है।

भारत के लिए यह आवश्यक है कि वह अपनी सामरिक एवं आर्थिक नीतियों को संतुलित दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ाए। एक ओर उसे क्वाड जैसे समूहों और हिंद–प्रशांत रणनीति के माध्यम से क्षेत्रीय साझेदारी को मजबूत करना होगा, वहीं दूसरी ओर प्रत्यक्ष द्विपक्षीय संवाद और विश्वास–निर्माण की प्रक्रिया को भी निरंतर बनाए रखना होगा। तकनीकी आत्मनिर्भरता, आपूर्ति श्रृंखला का विविधीकरण, सीमावर्ती बुनियादी ढाँचे का सुदृढ़ीकरण और बहुपक्षीय मंचों पर सक्रिय कूटनीति, भारत को दीर्घकालीन स्थिरता की ओर ले जाने में सहायक होंगे। भविष्य की दृष्टि से भारत–चीन संबंधों को न तो केवल प्रतिस्पर्धा की दृष्टि से देखना चाहिए और न ही असीम सहयोग की कल्पना से। यह संबंध वैश्विक शक्ति–संतुलन, आर्थिक परिदृश्य और क्षेत्रीय सुरक्षा समीकरणों के निरंतर बदलते परिवेश में आकार लेंगे। इसीलिए एक व्यावहारिक, बहुआयामी और दीर्घकालिक रणनीति ही दोनों देशों के बीच सहयोग को प्रोत्साहित करने, विवादों को नियंत्रित करने और एशियाई क्षेत्र की स्थिरता सुनिश्चित करने का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। यही नीति आने वाले दशकों में भारत की विदेश नीति और एशियाई शांति के लिए सबसे उपयुक्त दिशा होगी।

सीमाएँ और आगे का शोध–

यह दस्तावेज़ सार्वजनिक रूप से उपलब्ध स्रोतों पर आधारित है; गोपनीय सैन्य–विवरण व आंतरिक नीतिगत डॉक्युमेंट्स का समावेश नहीं है।

आगे की रिसर्च के लिए यह आवश्यक होगा कि अधिक प्राथमिक स्रोत (इंटरव्यू, सरकारी आर्काइव, फील्ड–डेटा) एकत्रित किए जाएँ ताकि विश्लेषण और भी विस्तृत तथा स्रोत–आधारित हो सके।

संदर्भ सूची–

1. Carnegie Endowment — Negotiating the India-China Standoff: 2020–2024. Carnegie Endowment
2- Council on Foreign Relations (CFR) — The China-India Relationship: Between Cooperation and Competition. Council on Foreign Relations
3- Reuters — India trade deficit with China widens to record $99.2 bln amid dumping concerns (Apr 16, 2025). Reuters
4- Chatham House — How China–India relations will shape Asia and the global order (Apr 23, 2025). Chatham House
5- Al Jazeera — How India and China pulled back from a border war (Oct 22, 2024). Al Jazeera
6- Ministry of Commerce & Industry, Government of India — Trade Statistics (official portal). commerce.gov.in
7- Reuters news on rare-earths and India's responses (Sept 2025) — India explores rare-earth deal with Myanmar rebels after Chinese curbs. Reuters
8- International Institute for Strategic Studies (IISS) — Prospects for India–China relations (May 16, 2025)